ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से

प्रस्तुतकर्ता-डॉ आरिफ महात

'दिनकर'

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख
उठाता है, जो दुसरों के पास होता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं।

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से/ रामधारी संह 'दिनकर'

ईर्ष्या की बडी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है वही बुरे कस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इस लए करता है क इस प्रकार दूसरे लोग जनता अथवा मत्रों की आँखों से गर जाए और जो स्थान रिक्त हो उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँ।

'दिनकर'

एक बात और है क संसार मे कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गरता। उसके पतन का कारण सदगुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करणे से अपने उन्नती नहीं कर सकता। उन्नती तो उसकी तभी होगी जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा गुणों का वकास करे।

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से/ रामधारी सिंह 'दिनकर'

चिंता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड लिया है, उस बेचारे की जिंदगी खराब हो जाती है। ईर्ष्या शायद फिर चिंता से भी बदतर चीज है क्यों कि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालता है।

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से/ रामधारी संह 'दिनकर'

आप कहेंगे क निंदा के बाण से अपने प्रतिदवन्व्दियों को बेधकर हँसने में एक आनंद है और यह आनंद ईर्ष्यालु व्यक्ती का सबसे बडा पुरस्कार है। मगर यह हँसी मनुष्य की नहीं राक्षस की हँसी है, यह आनंद भी दैत्यों का आनंद होता है।

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से/ रामधारी संह 'दिनकर'

ईर्ष्या का एक पक्ष सचमच ही लाभदायक हो सकता है। जिसके आधीन हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वंदी का समकक्ष बनाना चाहता है। कन्तु यह तभी संभव है जब क ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो।

'दिनकर'

ईश्वरचंद्र वद्यासागर जब तजूर्बे से होकर गुजरे, तब उन्होंने एक सूत्र कहा- तुम्हारी निंदा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है।

नीस्ते जब इस कूचे से हो कर निकलता है तब उसने एक जोरों की ठहाका लगाया और कहा क ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं, जो अकारण हमारे चारों
ओर भन भनाया करती है।

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से/ रामधारी संह 'दिनकर'

सारे अनुभवों को निचोडकर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा- आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते, लौग उससे जलते हैं।

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से ने कहा है क बाजार की मक्खियों को छोडकर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान है, उनकी रचना और निर्माण बाजार के तथा सुयश से दूर रहकर कया जाता है। जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं,
वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते, जहाँ बाजार की मक्खियाँ भी नहीं भनकती वहाँ एकांत है।

ईर्ष्या से बचने का उपाय मान सक अनुशासन है। जो व्यक्ती ईर्ष्यालु स्वभाव का हैं उसे फालतु
बातों के बारे में सोचने की आदत छोड देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है? जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आएगी, उसी दिन से
वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।